

Poos Ki Raat

— Munshi Premchand

(1930)

एक रात का आकाश बहुत ही सुंदर था।—आकाश में बहुत सारे तारे थे।
आकाश-आकाश में तारे, जो जो भी थे; आकाश में आकाश में
आकाश में तारे तारे तारे तारे तारे तारे—आकाश में तारे तारे,
जो तारे जो तारे तारे तारे तारे? आकाश-आकाश में तारे तारे तारे?
आकाश में तारे, आकाश में तारे तारे, आकाश में तारे

आकाश में तारे तारे तारे तारे तारे तारे तारे तारे तारे तारे तारे
तारे, आकाश में तारे तारे तारे तारे तारे तारे तारे तारे तारे

[Excerpt from Premchand's 'Poos Ki Raat' — a poignant tale of poverty and human dignity. Public domain.]